

2393
 R. 12. 11. 12

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ भ. गो ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज नमो भजे ॥ शोभते हि ते मर
 तो न हि न हि रसाति इकी न करणे ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवान् परमात्मा विश्वनाथ जी की राजधा
 नी वा राणा सी न गरी मा हां को दि ये क हृ द्वा ह्म रा ग ले व्या क र्ण य ह्म ला ग्पा का थि या इ कि
 ज करणे धानु को मा ठ ग न ला ग्पा का थि या ते हि द्यो क्ता को मु नि क न श्री शं क रा चा र्ये
 ले ति हृ द्वा ह्म रा ग ला इ वै रा ग्प दे व्या इ ज्ञान को आ र्ति श्री भगवान् मा भक्ति दि दा भ या हे हृ
 द्वा ह्म रा ग ति मि ले यो अ व स्था मा प ति प ठ न ला ग्पा हो व डो सु र्य वा द्दि ग न्मा हो अ व प ठ ले
 क्ता का र्थ सि द्ध हो ला के हू पा ठि स को ला त स नि मि न्न स व का र्थ हो डि हे मू ठ म ते गो वि न्द प
 र मा त्मा क न भ ज गो वि न्द क न भ ज गो वि न्द क न भ ज म नु स्य ते ज न्म लि या दो वि न्द को ठो आ फु
 ला इ चा हि न्पा इ ह लो क मा भ लो प र लो क मा ग ति मु कि हु न्पा प र मे श्व र का से वा भ क्तिः

॥ राम ॥

॥ १ ॥

कनहोडिओरकाममात्रेभुलिअलमलिईरहह ॥१॥ ॥वालसावनकीडाशक्तिनरुगः
 लावततहलीरक्त ॥ष्टदुस्मावताचिंतामग्नपरमेवह्यारिकोपितलग्नः ॥भज ॥ ॥वाला
 वस्थामावेलिदिनगुजस्रगह्नजवान्अवस्थामातरुगिस्त्रिमंगभुलिदिनगुजः
 लगह्नरुद्राअवस्थामापानेअनेकतरहकाचीनामावुडिरहहंतिनअवस्थामः
 धेस्यकेअवस्थामापानेपरमेअरकोभजनगन्याहोभनिस्यतोवुडिकोहिलिदेन
 नृहेमुहमतेगोविन्दकनभज ॥३॥२॥ ॥अंगमलितंपलितंपुरांडदशनविहीनंजानेनुराणं
 ष्टद्वयातिग्रीहीत्वादण्डतदपिनमुच्यताशापिंडं ॥भज ॥ ॥ष्टदुअवस्थाकारिण्यतिः
 इर्वलंगालिगयो कपालपातेसपेतभयोमुषकादंतपातिशरिगयोतेपातेवुढालोहो
 टकिटकिकायकावशलेफिदैरहहतेपातेवुढाकनआशालेहोडदेनपस्मोआशाग

॥ भ गो ॥

॥ २ ॥

रि केहि हुदै न परलोक सफर्या उपाय गरहे मुठ मते गोविन्द कन भज ॥ ३ ॥ ३ ॥ ॥ दिन मा पिर
जली सायं धान शिशिर वसंतो पुन गयान ॥ काल की डति गह्वरा गुप्त दपिन मुंचल्य शा
पायु ॥ भज ॥ ॥ आ आ भन्या को वडो नैन को रहेहु कैहे पानि हो उदै न आसा गदै मादि
न गयो रात्री भयो रात्री पानि गयो विहा न भयो फेरि साज भयो यज्ञे गरि मे ह
जांदा शिशिर वसंता दिह रिनु गया फेरि पानि शिशिर रिनु वसंत रिनु भयो ए स्वर
हले सधै उह काल उहि समय फिरेहु दिन रात्री सवे उहि हुन न जा कोहि छैन न आ
उदै छैन जादै पानि छैन उहि समय फेरि आउछु आ फनु आ गुमात्रै चलि जानु स कि जा छ
ते पानि आसा गरिया ले मन व्यक्त हो उदै न ए लो आसा छाडि कन हे मुठ मते गोविन्द
कन भज ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ नारि स्तन भर जघन ति वे संहृष्टा माया मोक्ष वेशम् ॥ एतन्मा

॥ राम ॥

॥ २ ॥

सवशादिविकारमनासिविचारवारंवारम् ॥ भज ॥ ॥ नारिहरुकासुन्दरस्तनसुन्दरजः
घनभयाकोदोषिकनमायामोहकावसमापरिजान्दुनयोसर्वैस्तनपांनजघनयानिमा
सुलेखोसालेभारिईकनवत्याकोमावैहोभानिमनमाधारंवारगरिजान्क्यानमोहमापतु
हेमूढमनोनिमिगोविन्दकनसेवागर ॥ ३ ॥ ५ ॥ ॥ अथेवांदिष्टुष्टमानुरश्चोचिबुकसम
पिनजानु ॥ करतलभिक्षातस्तलवासस्तदपिनमुच्यतांशापाशः ॥ भज ॥ ॥ दृष्टात्रव
स्थालेगल्पाकोअनवस्वनभयाकोठारिडमापयाकोएस्नादृष्टुलेअगाडिमाआगोः
लीकनतापदपीठमाद्यामकोराफलगाईहिरात्रिमानिन्दानयाउनालेठंडिहुनाले
आफनाघुडामाचिउओअयाइवतिरहदुनुम्वापानिहेनआफ्रसनेमाभिक्षामागि
आहवासहेनदृक्षमनिवस्तदृस्नाअवस्थाभयापनिअपनिकेहिसुरवमला

का

गो॥

॥३॥

होलाकिभनिआसासासलेहोउदेनहेमूठमनेतिमिगोविन्दकनभजगोविन्दकन
भजगोविन्दकनभज॥३॥६॥ ॥रथाकपर्दविरचितकंथापुंरणापुरापविवजितकं
था॥ नत्वंनाहं नाथलोकस्तदपिकिसर्थाकि यनेओक॥भज॥ ॥चवकागर्णाहोनव
भन्यादेधिकघडालगाउनुपयोभन्यागालिमाफाल्याकाकपडालगाउनुपुन्यकोमा
गर्पनिपायकोमार्गपनिहोडिदिनुतिमिपनिकोहिहोनमंपनिकोहिहोइनयोदे
षियाकोसबैलोकलावालस्करपनिकोहिहोइनउसैकिमायाहोयोसबैसधेर
हन्पापनिहोनआधिरमनेपन्याहसस्त्राहंदाभापनिआफुलाईक्याहोलाकसोहो
लामरिनांलाकीभनिअर्कोकोहिआफुनुपियारोमन्योभनिकनपनिओकक्यानगु
हेमूठमनेगोविन्दकनभज॥३॥७॥ ॥वयासिगनेककामविकारअव्येनीरेक

॥राम॥

॥३॥

कासारः॥ क्षीणो वितेकः परिवारे जाति तत्वेकः संसारः॥ भज॥ ॥ वयस्य कियार्थं पानक
दयकोपि डाका हाइ हूँ देन जल सकिया पछितला उँ काहार हंहर हं देन धन सकिः
या पछिचाकर परिवार काँहार हंहर हं देन नूतन सै गरिकन मनुष्य का तत्वज्ञान भया
उपान्त संसार का हाइ संसार हं देन नूतन निमित्त हे मूढ मते गोविन्द कन भज॥ ३॥ ८॥ ॥ य
कीटो पाजर्न शक्त स्तावतीति ज परिवारे रक्तः॥ पञ्चाद्रावतीति जर्जर दे देवात कोपि न हृ
तिगेहे॥ भज॥ ॥ जाहास स्यात्पुले धन को उँ पाजर्न गर्न सक छ नाहास स्यात्पुले धन परि
वार हूँ आ फु दोषि नूतन सिर हूँ नूतन वडो भयो सामर्थ्य गयो लोहोटे कि हूँ दापनि
पछि पछि रहन लागो तव धर मा को हि पनि मोक्ष निगदें नूतन हे मूढ मते गोविन्द क
न भज॥ ३॥ ९॥ ॥ जीटलो मुडित लुं चित केश काषायो वर वहु कृत वेशः॥ पञ्चपन्न

॥ भ. गो ॥

पिनचयप्रपतिलोक उदरतिमिनिनितवहुकृतवेशं ॥ कोहिजनआफनुरवानुजगाउंना
 निमिनजटापालिकनवडातपश्वीजस्ताहुंदन कोहिमुउनगरिआहुंदन कोहिन
 रासाकेशउषेलिहरिनिकालिसुन्दरहुंदन माजिठोगेरुपभुतिरंगलेरंगायाकाअनेकतः
 रहकावस्त्रपोसाकगरिअनेकद्वंद्वद्वंद्वयस्नातरहगारिकनआफनुरकार्यपरलोकसप्र
 न्याकरोकोहिहुन्याहेनभातिजान्दाजांदेपनियादराधिसमूदेनन. वोदरकातिमिनव
 हुतैतरहकोपोशाकगरिअनेकउचसगरिदेयाउंदनरस्तापद्विलागनुहेनहेमूठमते
 गोविन्दकनभज ॥ ३ ॥ १० ॥ ॥ गेयंगीतानामसहस्रं देयश्रीपतिरूपमजत्रम ॥ का
 यंपंडितसज्जनसंगंदेयंदीनजनायचचितम् ॥ भज ॥ ॥ गीतगर्नुपाठगर्नुचीजभ
 न्याकोगीताहोविष्णुसहस्रनामहोमनलेवारंवारध्यानगर्नुचीजभन्याकोभगवा

॥ राम ॥

॥ ४ ॥

न श्रीविष्णुकोरुपचारभुजामाशंसचक्रगदापद्मधारीपिताम्बरलगाकावनमालाको
 तुभमणिपैद्मकाशिरमकठलगायाकालक्ष्मीलेसहीतभयाकानारायनकोमूर्ति
 होतेहिमुर्तिकोवारंवारगारिवहुतेध्यानगर्नुसर्वदार्पणितस्यजनकासंगभारहनु
 दुःखीजनसाधुजनहरुलाईधनदिनुधानपैहनीदिनुहेमूढमतेगोविन्दकनभज
 ॥३॥११॥ ॥भगवद्गीताकिंचिदधीतागंगाजललवकारिणीपीता॥ येनाकारिमुहारेव
 र्चातस्पर्करोतिउज्जोपिनचर्चाम्॥भज॥ ॥भगवद्गीताकनत्रलिकटिपद्मापनिगंगा
 जीकाजलकोश्रीलिकीतिविंदपानगयाजस्तोहंछजस्लेभाकिलगाईकनश्रीविष्णुकोपुजाग
 योतस्कनजमराजापनिचर्चागैदेनन॥१२॥ ॥पुनरपिजनमंपुनरपिमरणांपुनरपिज
 ननीजठरेशयनम॥ ईहसंसारखलुदुस्मास्तारेकपयापारेपाहिमूरारे॥भज॥ ॥येसअसा

॥ भ. गो ॥

रसंसारमाफेरिपनिजन्मलिनुपद फेरिपनिमनुपद फेरिपनिमाताकागर्भमावासति
नुपदयोकेहेपनितीरिसकनु असारसंसारसागरनाहवुडिपडिरह्साका मकनह
परमेश्वरहेतक्ष्मीनारायणातिमिते महाकृपागवि कृपागारिकनरक्षागर एसतरह
ले भगवान्नारायणकोपाथनागनुहैमूढमतेगोविन्दकनभज ॥ ३ ॥ १३ ॥ ॥ क
रुत्वंकोहंकुत आयात कामेजननीकोमेतात ॥ इतिपरिभावय भवनमसारं सर्वं ते तात्त्व
प्रविचारम् ॥ भज ॥ ॥ योसंसारमाजन्मलियाकातिमिकोहो आफुकनठहरावमपनि
कोहुंकाहादेयितिमिहामिआज्जोथ्युंयोपनिविचारगरमेरिमहत्तारिभन्तुपनिकोहुन्मेरा
वावाभन्तापनिकोहुन्योसर्वेमायामात्रैहोत्त्वप्रादेव्याजस्तोमात्रैहोयोसर्वेजगत्संसार
असारैहो रुदाहो नित्यैहो नभनिवारंवारविचारगरिकनवुरुयोअसारसंसारकोजंजालक

आशा अरुकाथि

2393

॥ राम ॥

॥ ५ ॥